



865BVZ

इस बार इतनी बारिश हुई कि गाँव में बाढ़ आ गई। गाँव के सभी लोगों ने बचने के लिए टीले पर बने पचायत भवन में शरण ली।





आपदा का अर्थ होता है— अचानक आने वाला संकट। आपदा अचानक होने वाली वह घटना है जिससे सामान्य जन जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। प्रायः हम सभी किसी न किसी संकट जैसे आँधी, तूफान, बाढ़, भूकम्प, सड़क दुर्घटना आदि के विषय में देखते या सुनते रहते हैं। जब यही संकट व्यापक रूप ले लेते हैं तब ये आपदाएँ कहलाती हैं। आपदाएँ मुख्यतः दो तरह की होती हैं—

प्राकृतिक आपदाएँ — ऐसी आपदाएँ जो प्रकृतिजन्य होती हैं, प्राकृतिक आपदाएँ कहलाती हैं। जैसे — भूकम्प, बाढ़, सूखा, लू, आँधी, तूफान, शीत लहर, बादल फटना, वनों में आग लगना, ज्वालामुखी, भूस्खलन आदि।

मानवजनित आपदाएँ — ऐसी आपदाएँ जो मानवजन्य होती हैं, मानव जनित आपदाएँ कहलाती हैं। जैसे — आग, प्रदूषण, अपराध, दंगा, रासायनिक दुर्घटनाएँ, जनसंख्या विस्फोट, भीषण रेल दुर्घटना आदि।



चर्चा करिए—

- क्या कभी आपने या आपके किसी जानने वाले ने ऐसी मुसीबत का सामना किया है ?
- ऐसी मुश्किल समय में लोगों को किस-किस तरह की राहत सामग्री की जरूरत पड़ती है ?
- लोग अक्सर एक जगह पर पास-पास क्यों बसते हैं ?
- क्या आपने कभी देखा है कि पास-पड़ोस के लोगों ने मिलकर एक दूसरे की मदद की हो? कब-कब और कैसे ?

लोगों को कई बार ऐसी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, जिसमें जान-माल का भारी नुकसान होता है। बहुत से लोग बेघर हो जाते हैं। ऐसे समय में आपदा ग्रसित क्षेत्र में विशेष सहायता की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक प्रगति ने इनका (आपदाओं का) सामना करने में मनुष्य की बहुत सहायता की है।

प्रायः यह देखा गया है कि जब कभी भी आपदा आती है तब वहाँ बचाव कार्य के लिए सर्व प्रथम स्थानीय लोग ही आगे आते हैं। अतः स्थानीय लोगों के लिए आपदाओं से निपटने एवं बचाव के तरीकों को जानना आवश्यक है। आपदा आने पर हम किस प्रकार बच सकें और दूसरों की भी जान बचा सकें, आपदा प्रबन्धन द्वारा हमें यह जानने में मदद मिलती है। इस तरह के संकट की स्थितियों में हमें मुख्यतः तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए—

- सम्भावित खतरों की पहचान करना।
- आपदा से निपटने की तैयारी जैसे— भोजन, पेयजल, रोशनी आदि की व्यवस्था करना।
- आपदा के पश्चात बचाव, राहत एवं पुनर्वास कार्य।

इसके अलावा इन आपदाओं से निपटने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है— मनुष्य की अपनी सूझबूझ, धैर्य तथा आपदा से सम्बन्धित ली गई सावधानियाँ। विभिन्न तरह की आपदाओं से हम अपना बचाव नीचे दिए गए तरीकों से कर सकते हैं।

भूकम्प — जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है कि भूमि के कम्पन को भूकम्प कहा जाता है। यह एक विनाशकारी प्राकृतिक आपदा है। अधिक तीव्र भूकम्प आने से जमीन हिलने के कारण घर, मकान, पुल आदि गिर जाते हैं। इससे अत्यधिक जन-धन की हानि होती है।

भूकम्प से सुरक्षा —

- भूकम्प के समय अगर आप मजबूत इमारत के अन्दर हैं तो वहीं बने रहें। किसी मजबूत मेज या डेस्क के नीचे छिप जाएँ और उसे मजबूती से पकड़ लें। कम्पन बंद होने तक प्रतीक्षा करें।
- अगर पुराने व कमजोर भवन में हैं तो सुरक्षित रास्ते से बाहर निकलें।
- बाहर निकलने के लिए लिफ्ट का प्रयोग न करें। सीढ़ी का प्रयोग करें।
- खुले मैदान की तरफ जाएँ।



आग — कई बार लोगों की लापरवाही के कारण खेत, खलिहान, घर, दुकान आदि में आग लग जाती है। इससे बहुत ज्यादा जन-धन की हानि होती है।

आग से सुरक्षा –

- आग वाले स्थान के समीप न जाएँ।
- ज्वलनशील वस्तुओं से न खेलें तथा उसे सुरक्षित स्थान पर रखें।
- आग लगे हुए स्थान से रेंगते हुए बाहर निकलें और मुँह ढके रहें।
- शरीर के कपड़ों में आग लगने से दौड़ें नहीं बल्कि जमीन पर लेटकर बार-बार उल्टे पलटे ताकि आग बुझ जाए।
- आग लगने वाले स्थान पर चप्पल पहन कर जाएँ।
- जलते हुए टुकड़ों को सावधानी पूर्वक फेंके।
- आग बुझाने हेतु अग्नि शमन यंत्र, बालू, पानी आदि प्रयोग का करें।



अग्नि शमन यंत्र

बाढ़ – किसी रिहायशी क्षेत्र का जलमग्न हो जाना बाढ़ कहलाता है। बाढ़ अत्यधिक वर्षा के कारण आती है। अत्यधिक वर्षा से इतना पानी इकट्ठा हो जाता है कि वह रिहायशी इलाकों तक पहुँच जाता है। कभी-कभी नदी के बाँध टूटने से भी बाढ़ आ जाती है।

बाढ़ से सुरक्षा –

- बाढ़ आने पर ऊँचे एवं सुरक्षित स्थान पर जाएँ।
- जब तक बहुत जरूरी न हो, बाढ़ के पानी में न उतरें।
- जिन स्थानों पर बिजली के तार गिरे हों, उधर न जाएँ।
- बाढ़ आने पर किसी भी प्रकार के बिजली के स्विच को न छुएं।
- बाढ़ की सूचना मिलने पर घर के कीमती सामान तथा महत्वपूर्ण कागजात किसी सुरक्षित स्थान पर रखें।
- तैराकी सीखे तथा सिखाएँ।
- बाढ़ के बाद अक्सर जल जनित रोग फैलते हैं, उनसे बचाव के उपाय करें।



सोचिए और बताइए –

कभी-कभी कुछ इलाकों में बिल्कुल बारिश नहीं होती। नदी, तालाब, कुएँ आदि सब सूख जाते हैं। फसलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले

लोगों को मदद की जरूरत होती है। आप ऐसे लोगों की मदद कर सकते हैं। सोचकर बताइए कि आप अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करेंगे ?



किसी भी तरह के आपदाग्रस्त क्षेत्र में लोगों को कई प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती है। संकट की स्थिति में यह बहुत महत्वपूर्ण होता है कि लोगों की तात्कालिक मूलभूत आवश्यकताओं जैसे— भोजन, पेयजल, रहने का स्थान आदि की व्यवस्था की जाए। इस कार्य के लिए कई तरह की संस्थाएँ एवं सरकारी सेवाओं के द्वारा आपदा पीड़ित लोगों की मदद की जाती है।



पता करिए और लिखिए —

किसी मुसीबत के समय आपको इनकी जरूरत पड़ सकती है। इनसे सम्पर्क करने के लिए आप इनके फोन नं० तथा पता लिखिए —

सम्बन्धित सेवा	पता	फोन नं०
दमकल केन्द्र		
नजदीकी अस्पताल		
एम्बुलेंस		
नजदीकी पुलिस थाना		



1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

- (क) आपदाएँ मुख्यतः तरह की होती हैं।
- (ख) प्रदूषण एक आपदा है।
- (ग) भूकम्प के समय किसी इमारत से बाहर निकलने के लिए का प्रयोग करें।
- (घ) किसी रिहायशी क्षेत्र का जलमग्न हो जाना कहलाता है।
- (ङ) वस्तुओं से न खेलें।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

- (क) आपदा का क्या अर्थ है ?
- (ख) किन्हीं दो मानवजनित आपदा के नाम लिखिए।
- (ग) बाढ़ एवं सूखा में क्या अंतर है ?
- (घ) आपदा प्रबंधन किट में कौन-कौन सी सामग्री होती है ?
- (ङ) भूकम्प आने पर आप किस प्रकार अपना बचाव करेंगे ?



प्रोजेक्ट वर्क

विभिन्न प्रकार की आपदाओं से निपटने हेतु एक आपदा प्रबंधन किट तैयार कीजिए।